Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-5 | May - 2025

Original Article

विनोबा भावे और ग्राम स्वराज : गांधीवादी सोच का नया अध्याय

डॉ. देवचंद्र साह
इतिहास विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार
Email: devchandrasah501@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170512
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 5|
Pp. 60-63
May 2025
Submitted: 03 Apr. 2025
Revised: 12 Apr. 2025
Accepted: 24 May. 2025
Published: 31 May. 2025

सारांश

यह शोध-पत्र आचार्य विनोबा भावे के जीवन, विचारों और उनके द्वारा प्रतिपादित ग्राम स्वराज की अवधारणा का अध्ययन करता है, जो उन्होंने महात्मा गांधी की विचारधारा को आधार बनाकर विकसित किया। भारत की स्वतंत्रता के बाद जब देश आधुनिकता और औद्योगीकरण की ओर बढ़ रहा था, तब विनोबा भावे ने गांवों की आत्मनिर्भरता, सामाजिक न्याय और नैतिक मूल्यों को केंद्र में रखकर ग्राम स्वराज का मार्ग अपनाया। महात्मा गांधी का सपना था कि भारत का विकास तभी संभव है जब गांव मजबूत, आत्मनिर्भर और न्यायपूर्ण बनें। विनोबा भावे ने इसी विचार को अपने जीवन का लक्ष्य बनाया और उसे ज़मीनी स्तर पर लागू किया। उन्होंने भूदान आंदोलन की शुरुआत की, जिसमें वे स्वयं गांव-गांव पैदल चलकर ज़मींदारों से स्वेच्छा से ज़मीन दान करवाते थे और उस भूमि को भूमिहीनों में बाँटते थे। यह आंदोलन केवल भूमि वितरण का कार्य नहीं था, बल्कि यह एक नैतिक और सामाजिक चेतना का आंदोलन था, जिसका उद्देश्य समाज में समता, सहयोग और सेवा की भावना को जगाना था। यह शोध-पत्र इस बात की गहन पड़ताल करेगा कि किस प्रकार विनोबा भावे ने गांधी के ग्राम स्वराज के विचार को एक नए अध्याय के रूप में प्रस्तुत किया, और कैसे उन्होंने ग्रामीण भारत को आत्मनिर्भर और नैतिक समाज की दिशा में प्रेरित किया। उनके विचार आज भी भारत के विकास मॉडल के लिए एक प्रासंगिक और प्रेरणादायक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं।

मुख्य शब्द:- *विनोबा भावे, ग्राम स्वराज, गांधीवादी विचारधारा, भूदान आंदोलन, आत्मनिर्भरता, ग्रामीण विकास, सामाजिक न्याय।*

परिचय

भारत की आज़ादी के बाद देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती थी – गांवों का विकास और समाज में समानता की स्थापना। महात्मा गांधी ने ग्राम स्वराज का जो सपना देखा था, उसे व्यवहार में लाने का कार्य विनोबा भावे ने अपने जीवन के माध्यम से किया। विनोबा भावे न केवल गांधी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी थे, बल्कि उन्होंने गांधीवादी विचारधारा को सामाजिक आंदोलन के रूप में आगे बढ़ाया। उनका 'भूदान आंदोलन' ग्राम स्वराज की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल थी, जिसमें उन्होंने स्वयं भूमिहीनों के लिए ज़मीन मांगकर लाखों एकड़ भूमि एकत्र की और उसे जरूरतमंदों में बाँटा। विनोबा भावे का मानना था कि गांवों को आत्मनिर्भर, न्यायप्रिय और अहिंसात्मक बनाकर ही सच्चे लोकतंत्र की स्थापना संभव है। उनका ग्राम स्वराज का विचार केवल राजनीतिक या प्रशासनिक नहीं था, बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण भी था, जिसमें हर व्यक्ति को अपने कर्तव्य और दायित्व का बोध हो। उन्होंने कहा था कि "गांव को मंदिर बनाओ" – यानी गांव को ऐसा स्थान बनाओ जहाँ शांति, सेवा और सहयोग हो।Bयह शोध-पत्र विनोबा भावे के ग्राम स्वराज की संकल्पना और गांधीवादी सोच के नए अध्याय को समझने का प्रयास करेगा। इसमें देखा जाएगा कि कैसे विनोबा ने गांधी के सपनों को ज़मीन पर उतारा और भारत के ग्रामीण समाज को नयी दिशा दी।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
आढाव ज्योती सुभाष, संशोधिका, अर्थशास्त्र विभाग, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर मराठवाडा विद्यापीठ, छत्रपती संभाजीनगर

How to cite this article:
साह,. देवचंद्र. (2025). विनोबा भावे और ग्राम स्वराज : गांधीवादी सोच का नया अध्याय. Journal of Research & Development, 17(5), 60–63. https://doi.org/10.5281/zenodo.15709199

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI:10.5281/zenodo.15709199
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-5 | May - 2025

ग्राम स्वराज का अर्थ है—गाँव का स्वशासन। गांधीजी ने इसे स्वतंत्र भारत की आत्मा कहा था। वे मानते थे कि भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और जब तक गाँव स्वतंत्र, आत्मनिर्भर और आत्मसम्मान से युक्त नहीं होंगे, तब तक भारत का पूर्ण विकास संभव नहीं है (गांधी, 1938)। ग्राम स्वराज में राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और नैतिक स्वतंत्रता का समावेश होता है। विनोबा भावे ने ग्राम स्वराज की इस परिकल्पना को व्यवहार में लाने का संकल्प लिया। उनका मानना था कि केवल राजनीतिक स्वतंत्रता से समाज का उत्थान नहीं होगा, जब तक कि सामाजिक और आर्थिक विषमता को समाप्त नहीं किया जाए (नायक, 2022)। महात्मा गांधी की मृत्यु के बाद विनोबा भावे को गांधीवादी विचारधारा का नैतिक उत्तराधिकारी माना गया। उन्होंने गांधीजी के 'सर्वोदय' के विचार को अपनाया, जिसका अर्थ है—'सबका उदय, सबका कल्याण।' उनके अनुसार एक आदर्श समाज वही होता है जहाँ हर व्यक्ति को समान अवसर मिले, और संसाधनों का वितरण न्यायपूर्ण हो (राय, 2020)। विनोबा भावे ने ग्राम स्वराज को केवल एक राजनीतिक विचार न मानकर एक आध्यात्मिक और नैतिक आंदोलन के रूप में देखा। वे मानते थे कि यदि प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों का पालन ईमानदारी से करे, तो समाज में कोई शोषण नहीं होगा और हर गाँव स्वराज्य प्राप्त कर सकेगा (सिंह, 2019)।

1951 में विनोबा भावे ने भूदान आंदोलन की शुरुआत की। उन्होंने तेलंगाना के पोचमपल्ली गाँव से यह आंदोलन शुरू किया, जब एक जमींदार ने उनके अनुरोध पर स्वेच्छा से कुछ भूमि दान में दी। इसके बाद वे देश के विभिन्न हिस्सों में पदयात्रा करते हुए ज़मींदारों से भूमिहीनों के लिए भूमि दान की अपील करने लगे (दुबे, 2021)। भूदान आंदोलन ने न केवल भूमि वितरण की असमानता को चुनौती दी, बल्कि ग्राम स्वराज की दिशा में भी एक ठोस प्रयास किया। इससे गाँवों में संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण हुआ और समुदाय में सह-अस्तित्व की भावना मजबूत हुई (मिश्र, 2022)। भूदान आंदोलन की सफलता के बाद विनोबा भावे ने ग्रामदान आंदोलन शुरू किया, जिसमें पूरे गाँव को सामूहिक रूप से अपनी भूमि और संसाधनों को समाज के लिए दान करने का आह्वान किया गया। इसका उद्देश्य केवल भूमिहीनों को भूमि देना नहीं, बल्कि पूरे गाँव को आत्मनिर्भर और सामूहिक निर्णय लेने योग्य बनाना था (शुक्ला, 2020)। ग्रामदान आंदोलन में हजारों गाँवों ने भाग लिया और सामूहिक जीवन की ओर कदम बढ़ाया। यह प्रयास ग्राम स्वराज की उस अवधारणा के नजदीक था जिसमें व्यक्तिगत संपत्ति नहीं, बल्कि सामूहिक हित सर्वोपरि था (वर्मा, 2023)। विनोबा भावे मानते थे कि किसी भी समाज को सशक्त करने के लिए शिक्षा और नैतिकता की प्रमुख भूमिका होती है। वे केवल औपचारिक शिक्षा के पक्षधर नहीं थे, बल्कि नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा को भी उतना ही आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार गाँवों में शिक्षा का ऐसा ढाँचा होना चाहिए जो लोगों को आत्मनिर्भर, सहकारी और समाजसेवी बनाए (गुप्ता, 2018)। उन्होंने 'स्वराज शास्त्र' जैसे ग्रंथों के माध्यम से ग्राम स्वराज की नैतिक और दार्शनिक व्याख्या की, जिससे यह विचार केवल एक राजनीतिक आदर्श नहीं, बल्कि एक जीवन शैली बन सके (पटेल, 2019)। आज के वैश्विक और उपभोक्तावादी समाज में ग्राम स्वराज का विचार अधिक प्रासंगिक हो गया है। जलवायु परिवर्तन, संसाधनों की असमानता, बेरोज़गारी और ग्रामीण पलायन जैसी समस्याओं का समाधान ग्राम स्वराज की अवधारणा में निहित है (यादव, 2022)। विनोबा भावे के कार्यों से यह सिद्ध होता है कि यदि गाँवों को शिक्षा, संसाधनों और निर्णय लेने की स्वतंत्रता दी जाए, तो वे न केवल आत्मनिर्भर बन सकते हैं, बल्कि राष्ट्र निर्माण में भी अहम भूमिका निभा सकते हैं। भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे "स्मार्ट विलेज", "ग्राम पंचायत सशक्तिकरण", और "आत्मनिर्भर भारत" जैसे कार्यक्रम भी उसी दिशा में प्रयास हैं (भारत सरकार, 2023)। जहाँ विनोबा भावे के कार्यों की सराहना की गई, वहीं कुछ आलोचकों ने उनकी रणनीति को व्यवहारिक नहीं माना। कुछ ने भूदान आंदोलन को "प्रतीकात्मक" और "स्वैच्छिक सुधार" के नाम पर असंवेदनशील जमींदारों की दया पर आधारित बताया (चतुर्वेदी, 2021)। इसके अतिरिक्त, ग्रामदान आंदोलन को भी व्यापक रूप से स्वीकार नहीं किया गया, क्योंकि सामूहिक संपत्ति की अवधारणा भारतीय ग्रामीण समाज की परंपराओं के अनुकूल नहीं थी। फिर भी, विनोबा भावे की नीयत और प्रयासों की शुद्धता पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता। विनोबा भावे द्वारा ग्राम स्वराज की दिशा में किए गए प्रयासों में कई सामाजिक, आर्थिक और व्यवहारिक समस्याएँ सामने आईं, जो इस विचारधारा को पूरी तरह से लागू करने में बाधक बनीं।

भूदान आंदोलन स्वैच्छिक था, जिसमें ज़मींदारों से भूमि दान की अपेक्षा की गई थी। यह प्रयास नैतिकता और करुणा पर आधारित था, लेकिन व्यवहार में अनेक ज़मींदारों ने अनउपजाऊ, बेकार या कानूनी विवादों से जुड़ी भूमि ही दान की (दुबे, 2021)। इससे भूमिहीनों को वास्तविक लाभ नहीं मिल पाया। ग्रामदान आंदोलन में पूरे गाँव को संपत्ति और निर्णय लेने की प्रक्रिया में सामूहिकता अपनाने को कहा गया। लेकिन अधिकांश ग्रामीण समाज, जो लंबे समय से निजी संपत्ति के सिद्धांत पर आधारित था, सामूहिक स्वामित्व की सोच को अपनाने में असहज था (शुक्ला, 2020)।

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-5 | May - 2025

ग्रामीण समाज में शिक्षा और सामाजिक जागरूकता की कमी के कारण ग्राम स्वराज की मूल अवधारणाओं को समझना और उन्हें अपनाना कठिन था। विनोबा भावे ने नैतिकता और अध्यात्म पर जोर दिया, लेकिन अशिक्षा और कुरीतियों से जूझते गाँवों में इसे लागू करना आसान नहीं था (गुप्ता, 2018)। हालाँकि यह आंदोलन स्वतंत्रता के बाद शुरू हुआ, लेकिन सरकार का सक्रिय समर्थन सीमित रहा। भूदान और ग्रामदान आंदोलन को कानूनी या प्रशासनिक स्तर पर पर्याप्त सहायता नहीं मिली, जिससे इन प्रयासों का प्रभाव क्षेत्रीय स्तर तक सीमित रह गया (चतुर्वेदी, 2021)। ग्राम स्वराज की आत्मनिर्भरता की कल्पना तभी सफल हो सकती थी जब गाँवों में रोजगार और संसाधनों का विकास होता। लेकिन कई गाँवों में बुनियादी ढाँचा, तकनीकी सहायता और बाज़ार से संपर्क की कमी थी, जिससे स्वराज्य की परिकल्पना अधूरी रह गई (यादव, 2022)। गाँवों में जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता व्याप्त थी। ग्राम स्वराज की मूल भावना सबके समता और सहयोग पर आधारित थी, लेकिन व्यवहार में दलित और पिछड़े वर्ग इन आंदोलनों से पूर्ण रूप से लाभान्वित नहीं हो सके (राय, 2020)।

हालाँकि विनोबा भावे के प्रयासों को पूरी तरह से व्यावहारिक सफलता नहीं मिली, फिर भी उन्होंने ग्राम स्वराज की अवधारणा को भारतीय समाज में जीवित बनाए रखा और नैतिक जागरूकता की एक नई लहर चलाई। भूदान और ग्रामदान आंदोलन ने लोगों में नैतिकता, सामाजिक दायित्व और सेवा की भावना को जगाया। यह पहली बार था जब समाज के संपन्न वर्ग ने स्वेच्छा से गरीबों के अधिकारों की बात सुनी और अपनी संपत्ति बाँटने का प्रयास किया (शर्मा, 2021)। विनोबा भावे ने ग्राम स्वराज के माध्यम से एक वैकल्पिक विकास मॉडल प्रस्तुत किया जो ग्रामीण भारत की अस्मिता, आत्मनिर्भरता और स्वावलंबन को केंद्र में रखता था। यह मॉडल पश्चिमी भौतिकवाद और केंद्रीकृत शासन व्यवस्था के विकल्प के रूप में प्रस्तुत हुआ (पटेल, 2019)। उनके विचारों ने 'सर्वोदय' आंदोलन की आधारशिला रखी, जो सामाजिक समानता, आर्थिक न्याय और अहिंसा पर आधारित एक समतावादी समाज का निर्माण चाहता था। यह विचार आज भी कई सामाजिक संगठनों द्वारा अपनाया जाता है (सिंह, 2019)। विनोबा भावे की पदयात्राओं और जनसंपर्क से कई क्षेत्रों में राजनीतिक परिवर्तन और सामाजिक सुधार की शुरुआत हुई। अनेक गाँवों में स्थानीय स्तर पर ग्राम सभा, सहकारी संस्थाएँ और सामाजिक संगठन बने (वर्मा, 2023)। "स्मार्ट विलेज", "ग्राम पंचायत सशक्तिकरण" और "आत्मनिर्भर भारत" जैसी सरकारी योजनाएँ विनोबा भावे और गांधीजी के ग्राम स्वराज मॉडल से प्रेरणा लेती हैं, जो गाँवों को केंद्र में रखकर विकास की बात करती हैं (भारत सरकार, 2023)।

यह शोध इस परिकल्पना पर आधारित है कि विनोबा भावे द्वारा प्रस्तुत ग्राम स्वराज की अवधारणा एक गांधीवादी आदर्श थी, जिसे भारत के ग्रामीण समाज में आत्मनिर्भरता, सामाजिक समानता और नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए एक वैकल्पिक मॉडल के रूप में प्रस्तुत किया गया था। इस परिकल्पना के अनुसार, विनोबा भावे का मानना था कि यदि प्रत्येक गाँव अपने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कार्यों में स्वतंत्र और स्वावलंबी बन जाए, तो भारत का समग्र विकास संभव है। उनके भूदान और ग्रामदान आंदोलनों को इस दृष्टिकोण से देखा जा सकता है कि वे ग्राम स्वराज की व्यावहारिक रूपरेखा थे, जिनका उद्देश्य केवल भूमि का वितरण नहीं, बल्कि समाज में नैतिक चेतना और सेवा-भाव को जागृत करना था (शर्मा, 2021)। इस शोध में यह भी परिकल्पित किया गया है कि यद्यपि

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-5 | May - 2025

ग्राम स्वराज की अवधारणा व्यवहार में कई चुनौतियों का सामना करती रही, जैसे भूमि सुधारों की सीमाएँ, संसाधनों की कमी, जातीय असमानता और प्रशासनिक समर्थन का अभाव — फिर भी इसने भारतीय ग्रामीण समाज को वैकल्पिक सोच और मूल्य-आधारित विकास की दिशा दी। इस प्रकार, यह परिकल्पना यह स्थापित करने का प्रयास करती है कि विनोबा भावे का ग्राम स्वराज केवल एक राजनीतिक या आर्थिक विचार नहीं था, बल्कि एक नैतिक और आध्यात्मिक आंदोलन था, जो आज भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है (दुबे, 2021)। इस शोध का उद्देश्य विनोबा भावे के ग्राम स्वराज संबंधी विचारों का विश्लेषण करना है, ताकि यह समझा जा सके कि उन्होंने गांधीवादी सोच को कैसे एक नए सामाजिक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया। शोध में गुणात्मक विधि का उपयोग किया गया है, जिसमें ऐतिहासिक, तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को अपनाया गया है। इस अध्ययन में प्राथमिक रूप से द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया, जिनमें पुस्तकें, शोध पत्र, पत्रिकाएँ, जीवनी-साहित्य, भाषण-संकलन, सरकारी रिपोर्टें और विश्वसनीय ऑनलाइन संसाधन शामिल हैं। विनोबा भावे के स्वयं के भाषणों, जैसे "गीता प्रवचन" और "भूदान आंदोलन के विचार," को विशेष रूप से अध्ययन की आधारशिला माना गया है (भावे, 1955)। साथ ही, गांधीजी के ग्राम स्वराज से संबंधित विचारों को संदर्भ स्वरूप उद्धृत किया गया है, जिससे विचारों की निरंतरता और विस्तार को स्पष्ट किया जा सके।Bशोध में सामाजिक-वैचारिक विश्लेषण को केंद्र में रखा गया है, जिसमें ग्राम स्वराज की अवधारणा, उसकी व्यवहारिक चुनौतियाँ, सफलता की सीमाएँ और समकालीन समाज में उसकी प्रासंगिकता को विश्लेषित किया गया है। इसके अतिरिक्त, कुछ चयनित ग्रामों में भूदान और ग्रामदान की ऐतिहासिक घटनाओं का अध्ययन करके यह समझने का प्रयास किया गया कि किस हद तक यह आंदोलन गाँवों में परिवर्तन ला सका। इस पद्धति के माध्यम से शोध ने ग्राम स्वराज को केवल एक राजनीतिक विचार नहीं, बल्कि एक नैतिक और सामाजिक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

निष्कर्ष

विनोबा भावे का ग्राम स्वराज का दृष्टिकोण केवल एक सामाजिक सुधार की योजना नहीं था, बल्कि यह एक वैचारिक क्रांति थी, जो भारतीय समाज की आत्मा को छूने का प्रयास करती थी। उन्होंने गांधीजी के आदर्शों को केवल दोहराया नहीं, बल्कि उन्हें एक व्यापक नैतिक आंदोलन के रूप में प्रस्तुत किया, जिसमें व्यक्ति के आत्मानुशासन, सेवा-भाव और सत्य के प्रति समर्पण को केंद्र में रखा गया। यह स्पष्ट होता है कि ग्राम स्वराज का विचार राजनीति या प्रशासन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह जीवन के हर क्षेत्र—शिक्षा, अर्थव्यवस्था, संस्कृति, पर्यावरण और आत्मिक उन्नति—को प्रभावित करता है। विनोबा भावे ने यह दिखाया कि सच्चे स्वराज की शुरुआत व्यक्ति के भीतर से होती है, न कि केवल बाहरी संरचनाओं के परिवर्तन से (दुबे, 2021)। आज जबकि भारत वैश्वीकरण, शहरीकरण और तकनीकी विकास के दौर से गुजर रहा है, ग्राम स्वराज की अवधारणा एक प्रासंगिक विकल्प के रूप में उभरती है—जो स्थानीय संसाधनों, सामुदायिक भागीदारी और नैतिक नेतृत्व पर आधारित है। यह विचार हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि विकास केवल भौतिक नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक भी होना चाहिए। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि विनोबा भावे का ग्राम स्वराज एक यूटोपिया नहीं, बल्कि एक संभावित सामाजिक व्यवस्था है, जिसे यदि आधुनिक संदर्भ में नवीनीकृत किया जाए, तो यह भारत को एक संतुलित, समावेशी और मूल्य-आधारित समाज की ओर ले जा सकता है।

संदर्भ

1. भारत सरकार. (2023). आत्मनिर्भर भारत अभियान. ग्रामीण विकास मंत्रालय. https://rural.nic.in
2. गांधी, एम. के. (1938). हिंद स्वराज. नवजीवन प्रकाशन.
3. गुप्ता, आर. (2018). विनोबा भावे और ग्रामीण शिक्षा का पुनर्निर्माण. भारतीय सामाजिक चिंतन, 12(3), 45–52.
4. चतुर्वेदी, पी. (2021). भूदान आंदोलन की आलोचना: एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण. समाज दर्शन, 5(1), 18–25.
5. दुबे, के. (2021). विनोबा भावे: एक युगपुरुष. सर्वोदय समीक्षा, 8(2), 33–40.
6. नायक, एस. (2022). गांधीवादी आर्थिक सोच और ग्राम स्वराज. भारत का विकास पथ, 7(4), 27–36.
7. पटेल, जे. (2019). स्वराज शास्त्र की शिक्षाएँ. ग्राम विकास पत्रिका, 3(1), 11–17.
8. मिश्र, वी. (2022). भूदान आंदोलन: इतिहास और प्रभाव. भारतीय आंदोलन संग्रह, 10(2), 19–29.
9. राय, डी. (2020). सर्वोदय और समता की ओर. गांधी विचार विमर्श, 9(3), 22–30.
10. शर्मा, ए. (2021). विनोबा भावे और ग्राम स्वराज का पुनर्पाठ. समाज विज्ञान शोध पत्रिका, 6(1), 14–23.
11. शुक्ला, एम. (2020). ग्रामदान की अवधारणा और उसका प्रभाव. भारतीय राजनीति समीक्षा, 4(3), 55–62.
12. सिंह, आर. (2019). नैतिक समाज की स्थापना में विनोबा भावे का योगदान. आध्यात्मिक भारत, 2(2), 30–37.
13. वर्मा, एस. (2023). ग्राम स्वराज की समकालीन प्रासंगिकता. भारत के विकास अध्ययन, 11(1), 9–15.
14. यादव, ए. (2022). ग्रामीण भारत में स्वरोजगार और संसाधनों की स्थिति. विकास समीक्षा, 7(2), 18–24.